

**Report of training on  
"Sustainable Management of NTFPs including Medicinal Plants"  
13<sup>th</sup> to 15<sup>th</sup> November 2019**

Non-timber Forest Produce (NTFPs) make significant contributions to biodiversity and rural livelihoods. With the increase in demands some NTFPs are being exploited unscientifically without considering sustainability of the resources from their natural habitat. There is urgent need to conserve NTFPs resources sustainably. Considering above, Extension Division of Forest Research Institute, Dehradun organized a three days training programme on "Sustainable Management of NTFPs including Medicinal Plants" for frontline staff of state forest department, farmers, NGOs, SHGs and other stake holders at Van Chetna Kendra, Almora, Uttarakhand from 13<sup>th</sup> to 15<sup>th</sup> November 2019. The training was inaugurated by Dr. Mohd. Yousuf, Head, Forest Entomology Division, FRI. Dr. Mohd. Yousuf welcomed all the participants in the training programme and briefed about the objective of this training. He pointed out the importance of NTFPs and sustainable management of NTFPs including medicinal plants so that well structured plan can be made for more NTFP management. On this occasion Ms. Sanchita Verma, and Mr. Mahesh Kumar, RFOs, State Forest Departments shared their views stating the importance of NTFPs into biodiversity conservation. In the training programme, 43 participants including forest officials, farmers, NGOs, SHGs and other stake holders participated. The following topics were covered in the training:

- Status of major NTFPS of Himalayan Region
- Sustainable harvesting of NTFPs and medicinal plants
- Insect pest of important NTFPs including medicinal plants species and their management
- Disease of NTFPs species and their management
- Cultivation, Value addition and processing of high altitude NTFPs including medicinal plants
- Utilization of Pines needles
- Seed collection, storage and nursery techniques of NTFPs and medicinal plants of Himalayan Region
- Marketing of NTFPs including medicinal plants and produces

Sri Kundan Kumar, DFO, Almora appreciated the training programme organized by FRI, Dehradun and requested to conduct such type of more training programmes in future. He said this training programme is very useful for their frontline staff and members of Van Panchyat. Dr.A.K.Pandey, Head, Extension Division, FRI, Dehradun said that Uttarakhand has treasure of NTFPs which can change the life of the people if managed sustainably. Dr. Pandey suggested various ways of sustainable management of NTFPs including medicinal plants for the benefit of society. He urged the participants to spread the message of sustainable harvesting and utilization of NTFP resources. Trainees were given technologies for sustainable utilization of NTFPs including pine needles. Training programme was concluded on 15<sup>th</sup> November 2019. Dr.A.K.Pandey gave away certificates to the participants. Participants showed great interest in this training and felt need for such type of training programmes on regular intervals. Dr. Devendra Kumar, Scientist D, Extension Division, FRI, Dehradun anchored the programme. Dr. Charan Singh, Scientist E, Extension Division, FRI delivered the vote of thanks. On this occasion Mr. Vijay Kumar, ACF, Extension Division, FRI, Dehradun and the other officials were also present and made efforts for the success of the training programme.



Participants in class at Van Chetna Kendra, SFD, Almora, Uttarakhand



Dr. A.K. Pandey, Head, Extension Division, FRI interacting with Participants in class at Van Chetna Kendra, SFD, Almora, Uttarakhand



Dr. A.K. Pandey, Head, Extension Division, FRI, Mr. Kundan Kumar, DFO, SFD, Almora interacting with Dr. S.C. Arya, Scientist D, GBPNIHESD, Kosi Katarmal, Almora showing product



Faculties and participants all to gather at Van Chetna Kendra, NDT, State Forest Department, Almora



Certificate distribution to the participant

## सतत प्रबंधन के अभाव में बिगड़ रही है पारिस्थिकी, वैज्ञानिकों ने जताई चिंता कहा सतत प्रबंध ही है वनों से हमारा प्राकृतिक सम्बंध

अल्मोड़ा। 'वनों से हमारा मूल प्राकृतिक सम्बंध सतत् प्रबंधन है और इसके बगैर हम वनों को नहीं बचा सकते। वनों का सतत् प्रबंधन नितांत आवश्यक है और वनों से जुड़ी हमारी हर गतिविधियों में इसे सम्मिलित करना होगा।'



यह बात गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान कोसी कटारमल के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ॰ सतीश आर्या ने यहां वन विभाग की एक कार्यशाला के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि अपार संभावनाओं वाले हमारे वन हमें विभिन्न प्रकार की पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। हमें इस धरोहर को बचाना के लिए हर संभव प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि काष्ठ उपज के साथ गैर काष्ठ उपज के रूप में वनों से हमें बड़ी मात्रा में संसाधन मिलते हैं लेकिन मानव उनका दोहन कर देता है, जिसे रोकने की आवश्यकता है।

वन अनुसंधान, संस्थान देहरादून द्वारा औषधीय पौधों सहित अकाष्ठ वन उपज के सतत् प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अवसर पर बड़ी संख्या में सरपंच, वन कर्मी और गैर सरकारी संस्थानों के प्रतिनिधियों को वनों के सतत् प्रबंधन के गुर सिखाए गए।

डॉ॰ आर्या ने बताया कि संस्थान द्वारा किस प्रकार वनों के सतत् प्रबंधन के तहत चीड़ पत्ती का प्रबंधन कर उससे कागज, बैग, फाईल कवर आदि के साथ आभूषण तैयार किए गए हैं। उन्होंने जैविक ईंधन के उपयोग और बनाने के तौर तरीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि वन हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं तथा दैनिक जीवन की अनेक आवश्यकताओं जैसे की लकड़ी, चारा, ईंधन, औषधी आदि की पूर्ति करते हैं। वनों द्वारा प्रदत्त उपज में अकाष्ठ वन उपज मुख्य रूप से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। वनों से लगातार लकड़ी, चारा, ईंधन तथा औषधीय पादपों से लेने के कारण वनों पर भारी दबाव पड़ता है तथा केवल वन क्षेत्रों से हमारी जरूरतें पूरी नहीं हो सकती। साथ ही लगातार दोहन के कारण कुछ वन प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा पैदा हो गया है तथा इनके सतत् प्रबंधन की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि किसी प्रकार सतत प्रबंधन के अभाव में वनों की पारिस्थितिकी बिगड़ रही है और वन्य जीवों से मानव का संघर्ष बढ़ रहा है। अल्मोड़ा वन प्रभाग के वन कर्मी, किसान, गैर सरकारी संगठनों, वन पंचायतों तथा स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा अकाष्ठ वन उपज, औषधीय पौधों के उपयोग तथा उनके सतत प्रबंधन स्वयं संरक्षण पर तकनीकी जानकारी प्रदान की जा रही है। प्रशिक्षण में वन प्रमंडल अधिकारी अल्मोड़ा कुन्दन कुमार ने भी शिरकत की तथा वनोपज तथा औषधीय पौधों के बारे में बताया।

देहरादून से आये हुए वैज्ञानिकों ने औषधीय पौधों तथा वन उपज से संबंधित अनेक तरह की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान की। डॉ० ए० के० पाण्डे, प्रभाग प्रमुख विस्तार प्रभाग वन अनुसंधान देहरादून ने औषधीय पौधों तथा अकाष्ठ वन उपज के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण विषय वस्तु पर डॉ० मोहम्मद युसूफ, डॉ० चरन सिंह, डॉ० देवेन्द्र कुमार, शैलेश पांडे ने भी विस्तार से तकनीकी जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर विजयकुमार तथा श्री यथार्थ ने प्रशिक्षण के प्रबंधन संबंधी कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यशाला आज 15 नवम्बर को संपन्न होगी।

[www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

## अल्मोड़ा में पिरुल से उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया

एनटीडी स्थित वन चेतना केंद्र में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला जारी है। कार्यशाला में आये प्रशिक्षार्थियों को वन अनुसंधान केंद्र देहरादून और जीबी पंत अल्मोड़ा के वैज्ञानिकों ने पिरुल से बने उत्पादों, औषधीय पौधों की खेती, नर्सरी, वन के महत्व, वनों से मिलने वाले चारे और लकड़ी आदि की विस्तार से जानकारी दी।

गुरुवार को वन अनुसंधान केंद्र देहरादून के वैज्ञानिक डॉ० एके पांडे ने कहा वनों के लगातार दोहन होने से वन प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। इसी के मद्देनजर वन अनुसंधान केंद्र देहरादून द्वारा औषधीय पौधों और वन उपज के सतत प्रबंधन के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखंड के अल्मोड़ा वन प्रभाग के वन कर्मी, किसान, गैर सरकारी संगठन, वन पंचायत व स्वयं सहायता समूह के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला में मौजूद डीएफओ कुंदन कुमार ने वनों में होने वाली उपज की जानकारी दी। जीबी पंत के वैज्ञानिक डॉ० सतीश चंद्र आर्या ने वनों की आग के कारण होने वाले नुकसान और बचाव के उपायों के बारे में बताया। साथ ही जीबी पंत संस्थान में बनाये जा रहे पिरुल के उत्पादों फाइल कवर, हैंड बैग, राखी, आभूषण और चीड़ की पत्तियों से निर्मित जैविक ईंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ० मोहम्मद युसूफ, डॉ० चरन सिंह, डॉ० देवेन्द्र कुमार, शैलजा पांडे ने तकनीकी की जानकारी दी। यहां विजय कुमार और यथार्थ कुमार आदि रहे।